INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

August 2021 E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue - 271

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना

अतिथी संपादक :
प्राचार्य डॉ. राजेंद्र भामरे
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नामपूर, तह. सटाणा, जिला. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक :
प्रा. रवींद्र ठाकरे (हिंदी विभागाध्यक्ष)

विशेषांक सह-संपादक :
डॉ. यु. बी. कदम (उपप्राचार्य)
प्रा. हर्षल बच्छाव
प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

August-2021
E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

Special Issue 271

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना

अतिथी संपादक
प्राचार्य डॉ. राजेंद्र भामरे
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नामपूर, तह. सटाणा, जिला. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक
प्रा. रवींद्र ठाकरे (हिंदी विभागाध्यक्ष)

विशेषांक सह-संपादक
डॉ. यु. बी. कदम (उपप्राचार्य)
प्रा. हर्षल बच्छाव
प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

अनुक्रमणिका

अ.नं.	शीर्षक	लेखक /लेखिका	पृ. क्र.
☼	संपादकीय	प्रा. रवींद्र ठाकरे	06
1	समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में जल पर्यावरण-चेतना	डॉ.बृजेश सिंह	08
2	राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह की गज़लों में जल- पर्यावरण संरक्षण	प्रो. डॉ. अनिता नेरे, डॉ. योगिता हिरे	12
3	डॉ. शंभुनाथ सिंह की 'पेड़ की पुकार' कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. जिभाऊ मोरे	17
4	बिन पानी सब सून	डॉ. बालकवि सुरंजे, ज्योति बी. थोरात	20
5	अशोक जमनानी के 'स्वेटर'कहानी संग्रह में पर्यावरण चेतना	डॉ. संदीप देवरे	23
6	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. वाल्मीक सूर्यवंशी	26
7	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना और वास्तव	डॉ. सजित खांडेकर	29
8	हिंदी कहानी साहित्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. कैलास बच्छाव	33
9	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. पूनम बोरसे	36
10	हिंदी-मराठी के संत साहित्य में व्यक्त पर्यावरण-चेतना	डॉ. दत्तात्रेय येडले	40
11	पर्यावरण चेतना आधुनिकता बोध	डॉ. पुष्पा पुष्पध	44
12	समकालीन हिंदी कविता और पर्यावरण चेतना	डॉ. सुमन पलासिया	48
13	हिंदी आदिवासी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. शशिकला सालुंके, प्रा. सविता तोडमल	52
14	बृजेश सिंह की गजलों में पर्यावरण चेतना	श्री भिकाजी कांबले	56
15	आधुनिक हिंदी कविता में अभिव्यक्त पर्यावरण चेतना	श्री अशोक पाटील	60
16	आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	श्रीमती ज्योति	64
17	पर्यावरण चेतना के रंग में सराबोर कवि पंत	प्रा. स्मिता मिस्त्री	70
18	राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह की गज़लों में पर्यावरण चेतना	प्रा. रवींद्र ठाकरे, प्रो.डॉ.अनिता नेरे	74
19	कवि सुमित्रानंदन पंत के काव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. हर्षल बच्छाव	80
20	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. संजय धोटे	84
21	कामायनी महाकाव्य में पर्यावरण चेतना	हंसा बागरे	90
22	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. नज़मा मलिक	97
23	कुइयांजान उपन्यास में पर्यावरण चेतना	प्रा. युवराज गातवे	102
24	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना	प्रो. डॉ. जयश्री गावित, वंदना जाधव	105
25	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. सुनिल पाटील	108
26	मीठी नीम: पर्यावरण संरक्षण का आदर्श पाठ	डॉ. मीना सुतवणी	114
27	उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में पर्यावरण चेतना	श्रीमती शबीना नाज	120
28	पर्यावरण के प्रहरी संत कवि	काग चांगाभाई मगनाजी	123
29	कवि सुमित्रानंदन पंत प्रकृति और वैश्विक महामारी	दिलीपकुमार गावित, डॉ. जशवंतभाई पंड्या	127
30	बाल कविताओं में पर्यावरण चिंतन	डॉ. गणेश शेकोकर	130
31	कामायनी में पर्यावरण चेतना	प्रा. शांताराम वलवी	137
32	विनोद चन्द्र पाण्डेय की कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. मनोहर माधवराव जगधाडे	142
33	तालाब हमारे प्रेरणास्रोत	डॉ. सुनिल चव्हाण	144
34	पर्यावरण की उपयोगिता एवं पर्यावरण संरक्षण : एक अध्ययन	डॉ. गीता, डॉ. ओकेंद्र	148
35	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. भरत शेणकर	156
36	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. मिनल बर्वे	159

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue – 271 : हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
August - 2021

हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना

प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, निमगाव,
तह- मालेगांव, जिला - नाशिक (महाराष्ट्र)
मोबा. ९४२१६०४६२४,Email - valmiksuryawanshi123@gmail.com

जीवन की उत्पत्ति ही पर्यावरण में हुई है और पर्यावरण ने ही मानव जीवन को बनाया है। पर्यावरण का अस्तित्व हम पर नहीं बल्कि हम पर्यावरण के अस्तित्व पर निर्भर हैं। मानव सभ्यता पर नजर डालें तो यह बात सामने आती है कि सभी सभ्यताँए प्रायः नदी तरों पर, वनों की गोद में ही पली और बढी है। यही कारण है कि जहाँ भी सभ्यताओं के भग्नाशेष मिले हैं वहीं आस-पास जलस्त्रोत भी अनिवार्य रूप से दिखाई दिए हैं। प्रारंभ में यद्यपि शिक्षा नहीं थी परंतु फिर भी लोग जलस्त्रोतों को गंदा नहीं करते थे। अशिक्षा के कारण सफाई आदि को धर्म से जोड दिया गया था, क्योंकि मानव जाति धर्म भीरू होती है।

पर्यावरण शब्द एवं उसका अर्थ व्यापक है जिसमें सारा ब्रम्हाण्ड ही समा जाता है। परि अर्थात हमारे चारों ओर का, आवरण अर्थात ढकना ही पर्यावरण है। यह सारा संसार जैसे-आकाश, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि तथा वन, वृक्ष, नदी, पहाड, समुद्र एवं पशु पक्षी आदि से आवृत्त है। यह सभी तत्वों तथा पदार्थों का समग्र रूप ही पर्यावरण है। उसी पर्यावरण में हम सब पैदा होते है, जीवित रहते है, साँस लेते है, फलते-फुलते है और अपने समस्त कार्यकलाप करते है। प्रकृति के पाँच तत्वों से मिलकर मानव शरीर की रचना हुई है। इसी प्रकार तुलसीदास ने `रामचरितामनस` के `किष्किन्धाकाण्ड` में लिखा है कि मनुष्य का शरीर भी प्रकृति के पाँच तत्वों - पृथ्वी, जल, पावक, गगन व समीर से मिलकर बना है -

``छिति जल पावक गगन समीरा
पंच रचित अति अधम सरीरा।`` (१)

भारतीय संस्कृति में वन और वनस्पति का बहुत अधिक महत्व रहा है। हमारे ऋषि-मुनि वनों में ही आश्रम बनाकर रहते थे। प्रकृति से उनका गहरा संबंध था। मानव, वन्य जीव-जन्तु, वृक्ष, पर्वत, सरिताएँ, ऋतुएँ आदि सभी परस्पर रूप से जुडे हुए है तथा यह पर्यावरण के अभिन्न अंग है। पुरातन युग में वन संन्यासी जीवन के तप का प्रमुख केन्द्र हुआ करते थे। वानप्रस्थ आश्रम के लिए संस्कृत में कहा गया है - ``वाने वन समूहे प्रतिष्ठते इति।`` अतः यह उल्लेखनीय है कि वेदों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों, सूत्रग्रंथों आदि सभी में सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति के भव्योज्ज्वल रूप प्रतिनिहित है। कवि अधिक संवेदनशीलता के कारण प्रकृति के समस्त दृश्यों से अभिभूत होकर वर्णन करता है। आदिकवि वाल्मीकि ने जब प्रकृति के दो निर्द्वन्द्व प्राणियों को मुक्त विहार करते देखा तो उनकी आत्मा भाव विहवल हो उठी, जब दूसरे ही क्षण एक को व्याध के बाण से आहत देखा तो करूणा का क्रन्दन फूट पडा। परिणाम स्वरूप कविता का जन्म हुआ -

`` मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वागमयः शाश्वती समः।
यत्क्रौंचयों मिथुनादेकमवधी काम मोहितम् ।।``२

प्रकृति के प्रति यह कवि-प्रेम अनादिकाल से अनवरत जारी है। यह वर्णन कभी स्वतंत्र आलंबन रूप मे, कभी हृदयगत भावों को उद्दीप्त करने अथवा आगे की घटनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में होता है।

आदिकालीन हिंदी काव्य में रासो-काव्यों में प्रकृति का आलंबन व उद्दीपन रूप में अतिशय वर्णन हुआ है। मैथिल कोकिल विदयापति रचित पदावली प्रकृति वर्णन की दृष्टि से अद्वितीय है -

``आएल रितुपति राज बसंत धाओल अलिकुल माधवि-पंथ।
दिनकर किरन भेल पौगंड केसर कुसुम धएल हेमदंड।``

भक्तिकालीन कवियों जैसे तुलसी, रहीम, कबीर, मीराबाई आदि सभी ने पर्यावरण को सुर्राक्षत रखने के लिए अपने साहित्य द्वारा जनसाधारण में जागरूकता फैलाई। तुलसीदास द्वारा रचित `रामचरितमानस` में इस प्रकार के प्रसंग मिलते है, जहाँ राम गंगा आदि नदियों की पूजा करते तथा सीता वृक्षों को सींचती दिखाई देती है। हिंदी साहित्य के काव्य की नवीनधारा (छायावाद) के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसादजी ने अपने काव्य में प्रकृति एवं पर्यावरण को सुन्दरता के साथ संजोया है जिससे प्रसादजी के काव्य में पर्यावरण व प्रकृति के प्रति गहन चिंतन परिलक्षित होता है। `कामायनी महाकाव्य` `झरना`, `लहर`, `आँसू`, `कानन`, `कुसुम चन्द्रगुप्त`, `एक घुट` आदि में पर्यावरण के महत्व को दर्शाते हुए पर्यावरण का सुंदर चित्रण किया है। `कामायनी` महाकाव्य मे `इडा` की यह सुंदर पंक्तियाँ दर्शनीय है -

``देखे मैंने वे शैल श्रृंग, जो अचल हिमानी से रंजित,
उन्मुक्त, उपेक्षा भरे तुंग अपने जड गौरव के प्रतीक
वसुधा का कर अभिमान भंग अपनी समाधि में रहे
सुखी बह जाती हैं नदियाँ अबोध कुछ स्वेत बिन्दु।``४

प्रकृति की छटा का सुंदर रूप मैथिलीशरण गुप्त के `साकेत`, `पंचवटी`, `यशोधरा`, `सिध्दराज` आदि ग्रंथों में सुन्दर रूप में अभिव्यतित होता है। चन्द्र-जोत्सना में रात्रिकालीन वेला की प्राकृतिक छटा का मुग्धकारी वर्णन द्रष्टव्य है -

``चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में,
स्वच्द चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अम्बरतल में।``५

प्रकृति की भव्यता पंत प्रसाद, निराला की कविताओं में यत्र-तत्र पाई जाती हे। यह कवि प्रकृति की रमणीयता में इतने मुग्ध हो जाते हे कि प्रेयसी का प्यार भी इन्हें तुच्छ लगता हे। `संध्या की छटा` निराला को सुन्दरी के रूप में आभासित होती है -

``दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है।
वह संध्या सुन्दरी परी सी
धीरे, धीरे, धीरे।``६

निष्कर्ष :-

अतः हिंदी कविता में पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं प्रकृति के सौंदर्य चित्रण व मानवीकरण से लेकर पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओंपर चिन्त किया गया है। आज मानव प्रकृति पर खेती योग्य जमीन पर आए दिन बडे-बडे मकान और अपार्टमेंट, कंकरीट के जंगलो की तरह पर्यावरण की समस्याओं को बडावा दे रहे है। विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं में पर्यावरण संसाधनों की बढती मांग पूर्ति से कम थी। अब विश्व के समक्ष पर्यावरण संसाधनों की बढती मांग को लेकर मानव ने पर्यावरण की सुरक्षा करना अपना कर्तव्य समझा है। पर्यावरण को असंतुलित और दुषित कर हम स्वयं का जीवन तो संकट में डाल ही रहे हैं। आने वाली पीढियों के साथ भी घोर अन्याय हो रहा हैं। मानव का संपूर्ण अस्तित्व प्रकृति से ही जुडा है, वह अपने

जीवन तथा सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रकृति पर पूर्णतः निर्भर है। अर्थात काव्य कथा, मानव का सौन्दर्य जीवन सभी प्रकृति से विद्यमान है। अस्तु हिंदी कवियों एवं साहित्यकारों ने अपने अधिकांश काव्यों तथा साहित्य में प्रकृति की महत्ता को दर्शाते हुए पर्यावरण के गुढ रहस्यों एवं तथ्यों को उद्घाटित कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागृति लाने की पूर्ण चेष्टा की है।

संदर्भ सूची :-

१) `रामचरितमानस` किष्किन्धाकाण्ड श्लोक ११ चौपाई-२ तुलसीदास, गीतावेरा गोरखपूर।
२) वाल्मीकि रामायण, १/२/१५
३) विदयापति पदावली पृ. २९५
४) `कामायनी ` जयशंकर प्रसाद पृ.०२
५) पंचवटी मैथिलीशरण गुप्त कविताकोष वेब पेज से पृ. ३५
६) कवि निराला - सं. सियारामशरण गुप्त पृ. ११